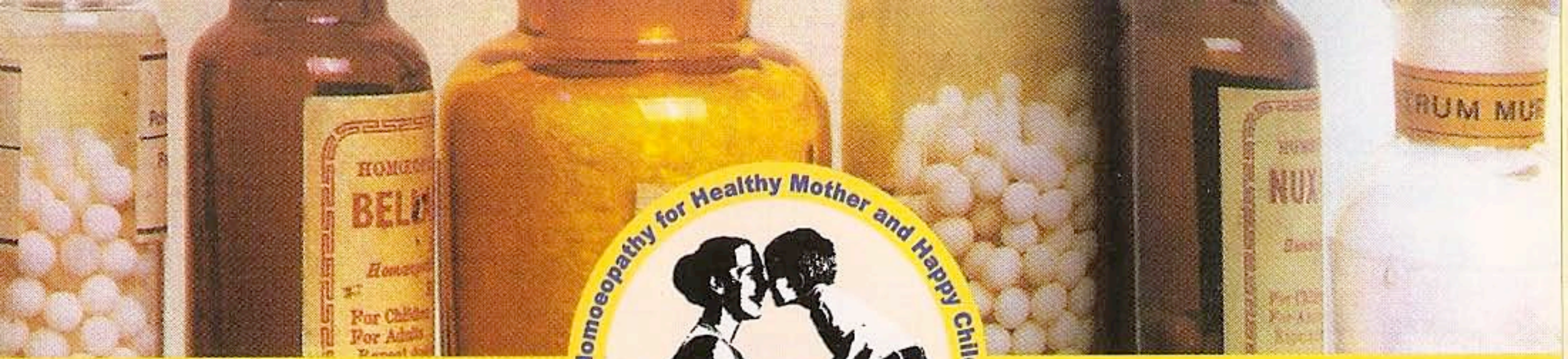

Homoeopathy for Healthy Mother and Happy Child

Multimedia campaign and three tier workshop at national, state and district levels

होम्योपैथी द्वारा
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु
राष्ट्रीय अभियान

बच्चों में श्वसनिक दमे का
होम्योपैथिक उपचार

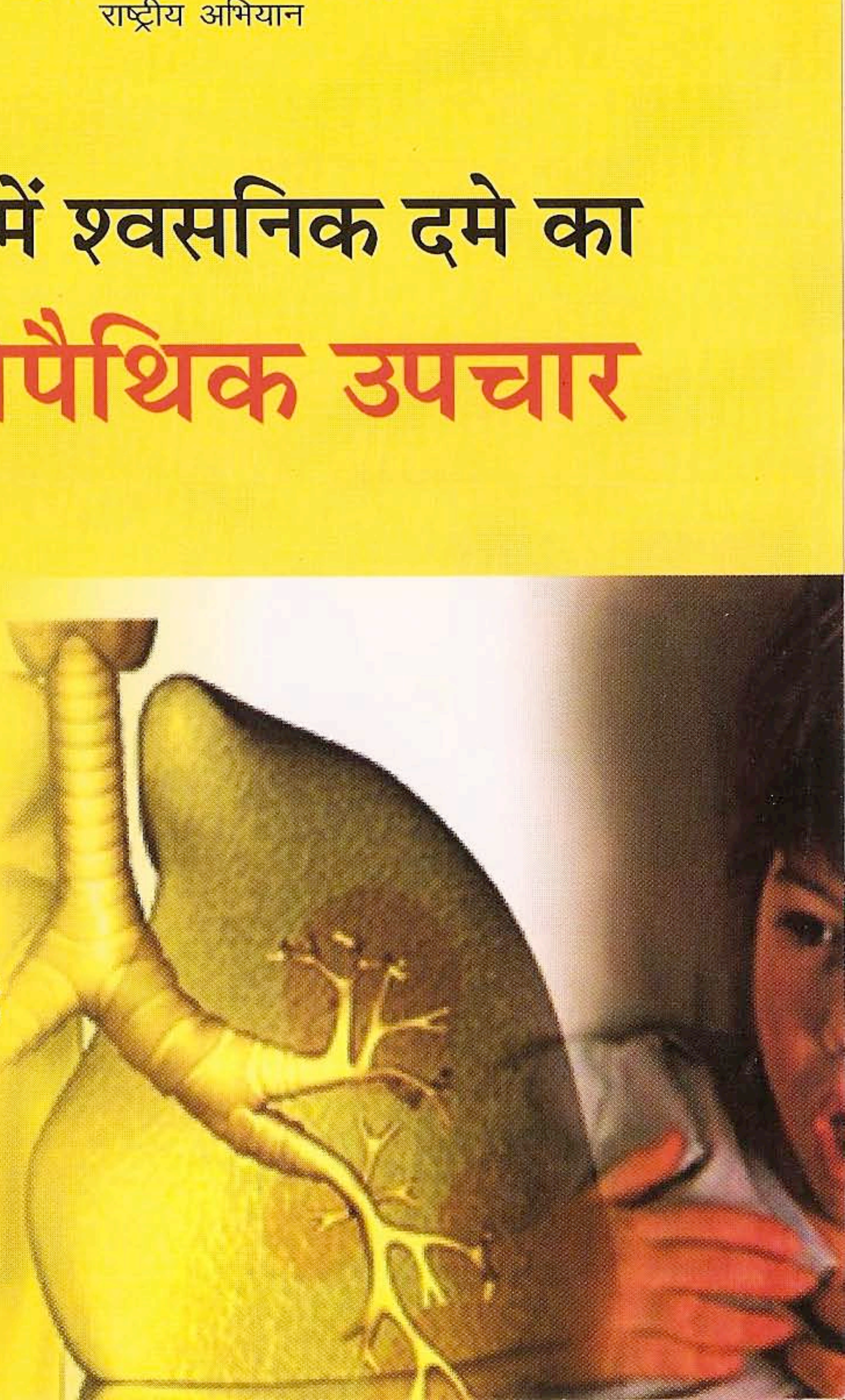

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी चिकित्सा विभाग (आयुष)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं
परिवार कल्याण मंत्रालय
के अधीन गठित स्वशासी निकाय)

बच्चों में श्वसनिक दमा

श्वसनिक दमा एक ऐसा रोग है जिसमें ऐलर्जी अथवा संक्रमण के कारण श्वसनियों अथवा श्वास नलियों में सिकुड़न पैदा होती है, जिससे खांसी तथा साँस लेने में कठिनाई होती है।

दमा दो प्रकार का होता है :

- **बहिस्थ (बाह्य) दमा** : यह किसी प्रकार के ऐलर्जन अथवा ऐलर्जी उत्पन्न करने वाले पदार्थ के सम्पर्क में आने से उत्पन्न होता है।
- **अंतःस्थ (आंतरिक) दमा** : यह संक्रमण द्वारा उत्पन्न होता है।

लगभग 75–80 प्रतिशत दमे से पीड़ित बच्चों में किसी न किसी प्रकार की ऐलर्जी पाई जाती है।

उत्प्रेरक कारण :

1. बाह्य (घर से बाहर) कारण : पेड़ पौधों के परागकणों अथवा कटी हुई घास एवं मिट्टी आदि के संपर्क में आने से।

   भीतरी (घर के अंदर) कारण : पालतू

   जानवरों के बालों अथवा पंखों, कालीन तथा दरियों में पड़ी धूल के कणों, काकरोच शमन आदि तथा घर के अंदर की धूल, मिट्टी आदि के संपर्क में आने से।

2. ठंडे मौसम में अधिक शारीरिक क्रियाएं जैसे दौड़ना और खेलकूद आदि से।
3. ऊपरी श्वसन तंत्र के संक्रमण, जैसे –जुकाम अथवा फ्लू इत्यादि।
4. मानसिक तनाव।
5. क्षोभक पदार्थ जैसे ठंडी हवा, तेज गंध तथा रसायनिक स्प्रे जैसे– इत्र, पेंट (रंग–रोगन) तथा सफाई में प्रयोग होने वाले द्रव्य आदि। चॉक, धूल मिट्टी,

   मैदान तथा लॉन आदि में छिड़के जाने वाली दवाइयाँ, मौसम में बदलाव, सिगरेट एवं तम्बाकू का धुआँ आदि।

लक्षण एवं चिन्ह :

दमे के तीव्र प्रकोप के निम्न लक्षण हैं :

- सांस लेने में तकलीफ होना।
- खांसी।
- व्हीजिंग – सांस लेते समय सीटी जैसी आवाज आना।
- छाती में दबाव महसूस होना।

उपरोक्त लक्षण अलग–अलग व्यक्तियों में भिन्न हो सकते हैं अथवा एक ही व्यक्ति में अलग– अलग समय पर विभिन्न रूप से प्रदर्शित हो सकते हैं। किसी व्यक्ति में उपरोक्त सभी लक्षण हो सकते हैं अथवा किसी –किसी में केवल खांसी एवं सांस लेने मे तकलीफ हो सकती है।

उपचार :

1. प्रकोपक कारणों से बचाव करें।
2. यदि मरीज को निम्नलिखित लक्षण हों, तो उसे तुरंत अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता पड़ सकती है।

- अनियंत्रित खांसी तथा सांस लेने में तकलीफ होना।
- छाती में दबाव तथा जकड़न महसूस होना।
- सांस लेने में ज्यादा कठिनाई ।

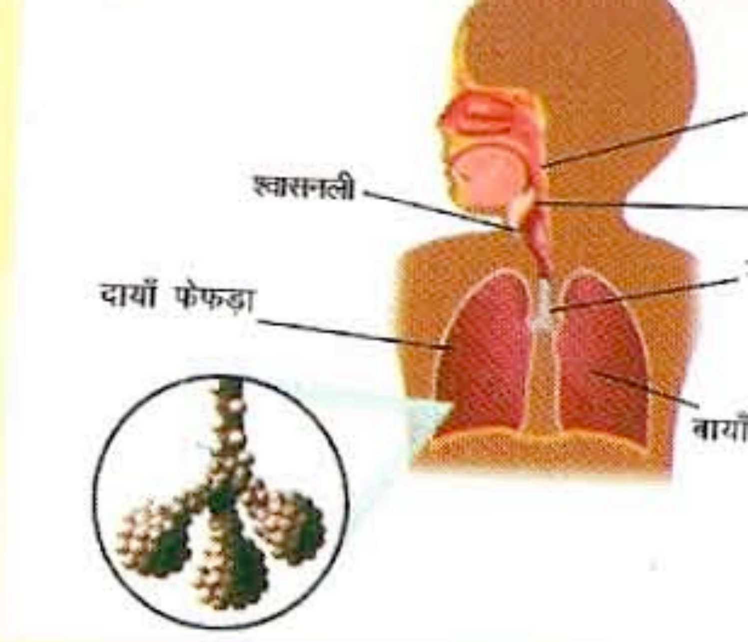

होम्योपैथी इस समस्या में किस प्रकार लाभदायक है :

- शरीर की प्रतिरक्षक (प्रतिरोधक) क्षमता को बढ़ाती है।
- औषधियों के कोई दुष्प्रभाव नहीं होते।
- आगे होने वाले प्रकोप की तीव्रता एवं बारम्बारता को कम करती हैं।

निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियां नवीन उत्पन्न श्वसनिका दमे के प्राथमिक उपचार में प्रयोग की जाती हैं। परन्तु **किसी भी औषधि के प्रयोग से पहले किसी योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।**

लक्षण	औषधि
• अचानक घुटन तथा सांस लेने में तकलीफ होना। • खांसी के साथ लगातार घुटन का आभास तथा उल्टी होना। • छाती में बलगम (कफ) का एहसास होने पर भी खांसी करने पर कफ बाहर न आना। • प्यास में कमी के साथ मुँह में अत्यधिक लार बहना।	*इपिकाकुआन्हा 30*
• आधी रात्रि के समय सांस लेने में अधिक कठिनाई होना। • घुटन होने के भय से लेटने में परेशानी होना। • बार–बार परन्तु कम मात्रा में पानी पीने की इच्छा होना। • बेचैनी एवं मृत्यु का भय होना।	*आर्सनिक एलबम 30*
• आर्द्रता अथवा नमी वाले मौसम में दमे की तकलीफ होना। • खांसते हुए छाती को पकड़ कर सहारा देने की इच्छा होना। • गाढ़ी, लेसदार एवं हरी बलगम।	*नैट्रम सल्फ्यूरिकम 30*
• दमे के साथ साथ पाचन में गड़बड़ी । • सुबह के समय, खाने के बाद अथवा क्रोधित होने के बाद लक्षणों में वृद्धि। • शुष्क मौसम में लक्षणों में वृद्धि। • आर्द्रता एवं नमी वाले मौसम में लक्षणों में सुधार होना।	*नक्स वॉमिका 30*

पीछे दिए गए निर्देशों का पालन करें